Dr.Sunita Kumari,
Guest Assistant Professor,
Dept. Of Home Science,
SNSRKS College, Saharsa
BA Part-III
Dt. 07/04/2022

Q. नवजात शिशु की क्या विशेषताएँ हैं ,वर्णन करें ? (continued)

3. नवजात शिशु का क्रन्दन (Crying of the Newborn)

नवजात शिशु का क्रन्दन जन्म के समय या जन्म के कुछ ही देर में प्रारम्भ हो जाता है। यही उसका प्रथम स्वर और भाषा होती है। जन्म के कुछ समय तक शिशु की यह भाषा पूर्णतः एक प्रकार की सहज क्रिया होती है। जन्म के समय बालक के क्रन्दन का बहुत बड़ा लाभ है। उसके क्रन्दन से उसके फेफड़े फूल जाते हैं और उसको श्वसन क्रिया आरम्भ हो जाती है। श्वसन क्रिया प्रारम्भ होने से उसके रक्त को ऑक्सीजन मिलने लग जाती है। जन्म के समय वह पहला अवसर होता है, जब बालक अपनी आवाज प्रथम बार सुनता है। जन्म के 24 घण्टे बाद ही शिशु के क्रन्दन के अर्थ बदल जाते हैं। नवजात शिशुओं का क्रन्दन कुछ विशेष अक्षरों से प्रारम्भ होता है। रोते समय शिशु हाथ-पैर चलाता है और कभी हाथ की मुट्ठी खोलता है तो कभी बन्द करता है।

एक अध्ययन (Aldrich, 1945) के अनुसार, शिशुओं के क्रन्दन के कई कारण होते हैं। यह कारण या तो शारीरिक होते हैं या वातावरण सम्बन्धी; परन्तु अक्सर इनके रोने के कारण अज्ञात होते हैं। एल्डरिच (1945) ने बच्चों के रोने के निम्न कारण बताये हैं-शोरगुल, प्रकाश, उल्टी होना, अधिक गर्मी, स्नान कराने पर रोना, भूख, अज्ञात कारण आदि। एक अध्ययन (M.E. Frics, 1941) में यह देखा गया कि सिजेरियन शिशु अन्य शिशुओं की अपेक्षा बहुत कम रोते हैं। एक अध्ययन (S. Karelitz, et al., 1964) में यह देखा गया कि गर्भकालीन अवस्था में जिन शिशुओं की माताएं अधिक औषधियों का उपयोग करती हैं या जन्म के समय जिन शिशुओं को कोई नुकसान हो जाता है, वे शिशु अन्य शिशुओं की अपेक्षा अधिक क्रन्दन करते हैं। ग्राहम (F. K. Graham, et al., 1962, 1963) ने अपने अध्ययनों में यह देखा कि, जिन शिशुओं का जन्म सामान्य रूप से होता है, वे जन्म के समय अन्य बच्चों की अपेक्षा बहुत तेज रोते हैं।

4. नवजात शिशु की संवेदनशीलता (Sensitivities of the Neonate)

नवजात शिशु की संवेदनशीलता का अध्ययन कठिन है; क्योंकि इस प्रकार के अध्ययन अन्तर्दर्शन विधि से किये जाते हैं। अतः यह भी बताना कठिन है कि कौन-सी संवेदनाएँ शिशु में पाई जाती हैं और कितनी मात्रा में पाई जाती हैं। गेसेल (Gesell, 1949) के अनुसार, "जो बच्चे गर्भकालीन अवस्था के पूर्ण होने से पहले ही जन्म ले लेते हैं, वे भी तीव्र उद्दीपकों के प्रति उसी प्रकार अनुक्रिया करते हैं, जिस प्रकार अन्य बालक शिशुओं में अन्य संवेदनाओं की अपेक्षा स्पर्श-संवेदना के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।"

i. दृष्टि (Sight) – जन्म के समय आँख का रेटिना, जिसमें दृष्टि की संवेदना के सेल्स पाये जाते हैं, पूर्ण रूप से परिपक्व नहीं होता है। जन्म के समय फोबिया में शंकु (Corics) बहुत कम स्पष्ट होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि जन्म के समय शिशु आंशिक रूप से 'कलर ब्लाइण्ड' होता है। यद्यपि अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जन्म के सातवें दिन शिशु रंगों के प्रति अनुक्रिया करते हैं। स्मिथ (Smith, 1936) का विचार है कि, "लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ जन्म के सात दिन से नौ दिन में रंग उद्दीपकों के प्रति अनुक्रिया अधिक करती हैं।" आँख के रेटिना में शंकुओं और दण्डों (Cones & Rods) की संख्या उतनी ही होती है जितनी कि वयस्क व्यक्तियों में हरलॉक (1968) का विचार है कि, "जन्म के प्रथम दिन शिशु बहुत पास की वस्तु को देख सकता है। पहले सप्ताह के अन्त तक वह पास की वस्तु को देख सकता है, परन्तु एक माह का शिशु कुछ दूर के उद्दीपकों को भी देख सकता है।"

ii. श्रवण (Hearing)- जन्म के समय यह ज्ञानेन्द्री अन्य ज्ञानेन्द्रियों की अपेक्षा सर्वाधिक कम विकसित होती है। जन्म के तुरन्त बाद नवजात शिशु सुनते हैं या नहीं, इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों में एक मत नहीं है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि, जन्म के दस मिनट में ही बच्चा सुनने लग जाता है, परन्तु अन्य लोगों का विचार है कि, जन्म के कुछ दिन बाद तक बालक पूर्णतः बहरा (Deaf) होता है। प्रैट (K. C. Pratt, 1954) का विचार है कि, नवजात शिशु जन्म के

तीसरे दिन से सातवें दिन के मध्य में ध्वनि उद्दीपकों के प्रति अनुक्रिया करने लग जाता है।" एक अन्य अध्ययन (A. S. Leventhal & L. P. Lipsitt, 1964) के अनुसार, जन्म के 118 घण्टे बाद शिशु ध्वनि स्थानीयकरण करने लग जाते हैं।

iii. स्वाद (Taste)- अन्य ज्ञानेन्द्रियों की अपेक्षा यह ज्ञानेन्द्री अत्यधिक विकसित होती है। अध्ययनों से यह देखा गया है कि शिशु मीठी उत्तेजनाओं के प्रति धनात्मक अनुक्रिया करते हैं और नमकीन, खट्टी तथा कड़वी चीजों के प्रति ऋणात्मक अनुक्रिया करते हैं। प्रैट (Pratt, 1954) का विचार है कि, स्वाद संवेदनशीलता सीमान्त के सम्बन्ध में शिशुओं में अधिक वैयक्तिक भिन्नताएँ पायी जाती हैं।

iv. गन्ध (Smell)– एक अध्ययन (L. P. Lipsitt, et al., 1963) के अनुसार, गन्ध संवेदनशीलता जन्म के समय काफी विकसित होती है या वह जन्म के कुछ ही दिनों में विकसित हो जाती है। माँ यदि अपने स्तन पर सिरके का अम्ल, अमोनिया, पैट्रोलियम, सन्तरे का तेल आदि लगाकर शिशु को स्तनपान कराये, तो शिशु स्तनपान नहीं करता है। प्रैट (Pratt, 1954) का विचार है कि इस संवेदनशीलता में भी वैयक्तिक भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

v. त्वक संवेदनशीलता (Skin Sensitivities) – स्पर्श, दबाव, ताप और पीड़ा सम्बन्धी संवदेनशीलता बालक में जन्म के समय पाई जाती है या इसका विकास जन्म के कुछ ही समय में हो जाता है। शरीर के अन्य अंगों की अपेक्षा कुछ अंग अधिक संवेदनशील होते हैं। अन्य अंगों की अपेक्षा होंठ अधिक संवेदनशील होते हैं। ताप उद्दीपकों की अपेक्षा शीत उद्दीपकों के प्रति शिशु अधिक अनुक्रिया करता है। जन्म के प्रथम दो दिन पीड़ा-संवेदना कुछ कमजोर होती है। होंठ, हथेली और पैर के तलवे में यह संवेदना अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसी प्रकार पलक, माथे पर और नाक की झिल्ली में यह संवेदना अधिक मात्रा में पाई जाती है।

5. नवजात शिशु के संवेग (Emotions of the Neonate) –

नवजात शिशुओं के संवेगों के सम्बन्ध में जो अध्ययन हुए हैं, वे कम हैं, परन्तु जो भी अध्ययन हुए हैं, वे विस्तृत अधिक हैं। वाटसन (Watson, 1925) के अनुसार, शिशु में जन्म के समय या जन्म के कुछ ही समय बाद तीन संवेग पाए जाते हैं। वाटसन का यह भी विचार है कि यह संवेग कुछ विशिष्ट उद्दीपकों के द्वारा शिशुओं में उत्पन्न किए जा सकते हैं। वाटसन के द्वारा बताये हुए तीन प्रमुख संवेग हैं-भय, क्रोध और प्रेम बैकविन (Bakwin, 1947) का विचार है कि, नवजात शिशुओं की संवेगात्मक अनुक्रियाएँ अत्यधिक विकसित होती हैं। उनके अनुसार, जो नवजात शिशु गर्भकालीन अवस्था को पूर्ण किए बिना उत्पन्न हो जाते हैं, उनमें भी समान प्रकार की संवेगात्मक अनुक्रियाएँ पाई जाती हैं।

हरलॉक (1978) का विचार है कि, "यह आशा करना अतार्किक होगा कि जन्म के समय संवेगात्मक अवस्थाएँ पूर्णतः परिभाषित होती हैं, वैसी ही जैसे विशिष्ट संवेगों की।" (It would be illogical to expect that emotional states at birth would be so well-defined that they could as readily identified as specific emotions.) 377 आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि नवजात शिशुओं में निश्चित संवेगात्मक प्रतिमान नहीं पाए जाते हैं, बल्कि इनमें संवेगात्मक अनुक्रियाओं के नाम पर केवल दो प्रकार की अनुक्रियाएँ पाई जाती हैं। प्रथम प्रकार की अनुक्रियाएँ सुखात्मक 'अनुक्रियाएँ (Pleasurable Responses) हैं। ये अनुक्रियाएँ बालक में स्तनपान करते समय दिखाई देती हैं या बालक को अच्छी तरह गोद लेते समय दूसरे प्रकार की संवेगात्मक अनुक्रियाएँ असुखात्मक अनुक्रियाएँ (Unpleasant Reponses) हैं, यह अनुक्रियाएँ शिशु उस समय करता है, जब अचानक उसे गलत तरीके से उठा लिया जाय अथवा इसी प्रकार उसे लिटाया जाय या तेज शोरगुल हो। कुछ मनोवैज्ञानिकों (K. M. Bandham, 1951; R. A. Spitz, 1949) का विचार है कि, सुखात्मक अनुक्रियाओं की अपेक्षा असुखात्मक अनुक्रियाएँ शिशु अधिक स्पष्ट ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। जब माँ शिशु को स्तनपान कराना समय से पहले ही छुड़ा देती है तब उसे स्तनपान के स्थान पर बोतलपान से प्राकृतिक सन्तुष्टि न मिलने के कारण बालक माँ के स्नेह और प्रेम का भी भूखा रह जाता है। इस प्रकार के बालकों में प्रेम संवेग का विकास सामान्य रूप से नहीं होता है। आधुनिक युग में अनेक स्त्रियाँ अपने नवजात शिशुओं को इसलिए स्तनपान नहीं कराती हैं कि उनके स्तनों की आकृति बिगड़ जाएगी, परन्तु यह सत्य नहीं, भ्रामक है। इस दिशा में हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जो माताएँ अपने शिशुओं को जितना ही अधिक स्तनपान कराती हैं, उनके स्तनपान कराने से उनके स्तनों और उनकी योनि (भग) का आकार सुदृढ़ होता है।

जब माताएँ अपने रोते शिशुओं को व्यस्तता के कारण परिवार के अन्य लोगों को चुप कराने के लिए दे देती हैं या बच्चे की देखभाल करने वाली आया को चुप कराने के लिए दे देती हैं तो वह बहुधा शिशु को डरा-धमकाकर चुप कराते हैं, ऐसे में बालक में भय संवेग के अति विकसित होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

कभी-कभी यह भी देखा गया है कि माता की व्यस्तता या अन्य किसी कारणवश नवजात शिशु का लालन-पालन सही ढंग से नहीं होता है। नवजात शिशु यदि रो रहा है तो रोते-रोते स्वयं रो-रो कर चुप हो जाता है। इस प्रकार की अवस्थाएँ बालक में भय, असुरक्षा और नैराश्य की भावनाएँ उत्पन्न करती हैं।

6. नवजात शिशुओं में अधिगम की क्षमता (Capacity for Learning in Infants)

कोई भी प्राणी किसी समस्या या क्रिया का अधिगम तब कर सकता है, जब वह उस समस्या के सम्बन्ध में जागरूक हो। किसी समस्या के अधिगम के लिए यह भी आवश्यक है कि अधिगमकर्त्ता के स्नायु इतने विकसित और परिपक्व हो कि वह समस्या का अधिगम कर सकें। नवजात शिशुओं के स्नायु और मस्तिष्क इतने परिपक्व नहीं होते हैं कि वे किसी समस्या का सरल से सरल विधि द्वारा अधिगम कर सकें। नवजात शिशुओं में जागरुकता भी नहीं के बराबर पाई है। कुछ अध्ययनों (D. P. Marquis, 1941; K. C. Pratt, 1954) के द्वारा यह स्पष्ट हुआ है कि यद्यपि नवजात शिशुओं में अनुबन्धन (Conditioning) द्वारा अधिगम बहुत कठिन है, फिर भी स्तनपान सम्बन्धी परिस्थितियों (Feeding situation) के प्रति नवजात को अधिगम कराया जा सकता है, परन्तु यह अनुबन्ध जन्म के कई दिनो बाद ही स्थापित कर सकता है।

7. नवजात शिशुओं का व्यक्तित्व (Personality of the Neonate)

नवजात शिशुओं के व्यक्तित्व में अन्तर कुछ ही दिनों में दृष्टिगोचर होने लगता है। हम सभी जानते हैं कि कुछ नवजात शिशु सोने की तरह अच्छे और कीमती भी होते हैं और कुछ माता-पिता के लिए अत्यधिक परेशानी पैदा करने वाले होते हैं। नवजात शिशुओं के व्यक्तित्व में अन्तर वंशानुक्रम और वातावरण सम्बन्धी कारकों के कारण तो होते ही हैं, साथ ही साथ व्यक्तित्व में अन्तर अपरिपक्व जन्म (Premature Birth), जन्म के समय की परिस्थितियाँ तथा स्वास्थ्य की दशाएँ आदि कारकों के कारण भी होते हैं। फ्रायड (Freud, 1936) का विचार है कि, नवजात शिशु के लिए जन्म एक दैहिक और मनोवैज्ञानिक आघात (Physiological and Psychological Shock) है। इस आघात के कारण बालक में चिन्ता उत्पन्न हो जाती है। कुछ मनोवैज्ञानिकों (H. Raju, 1949. H. A. Carruthers, 1951) का विचार है कि, इस बात का कोई प्रभाव नहीं है कि जन्म शिशु के लिए आघात है और उनमें चिन्ता उत्पन्न करता है तथा जन्म उनके व्यक्तित्व विकास को महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। यह अध्ययनों द्वारा अवश्य सिद्ध हो चुका है कि जो बालक जन्म होते ही माँ से अलग कर दिये जाते हैं और माँ से दूर रखे जाते हैं, उनका विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन उतना अच्छा नहीं होता है, जितना कि उन बच्चों का, जो माँ के साथ रहते हैं।

गर्भकालीन अवस्था में माँ की विचारधारा भी बालक के व्यक्तित्व को महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती है। कई बार यह देखा गया है कि बच्चा जब इच्छित यौन का नहीं होता है, तो माँ अपने वर्तमान अनिच्छित बालक का अधिक अच्छी तरह लालन-पालन नहीं कर पाती है। एक अध्ययन में यह देखा गया कि, जो सिजेरियन बच्चे होते हैं, वे जन्म के बाद स्वभाव से चुप रहने वाले होते हैं, परन्तु जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उनका समायोजन बहुत अच्छा होता है। कुछ अध्ययनों में यह भी जानने का प्रयास किया गया कि जन्म के महीने का बालक के व्यक्तित्व और व्यवहार से क्या सम्बन्ध है ? एक अध्ययन (Pintner & Forlano, 1934) में यह देखा गया कि, अधिकांश प्रतिभाशाली और प्रसिद्ध व्यक्ति अक्टूबर माह में जन्मे हैं तथा बसन्त में ऐसे बहुत कम व्यक्तियों का जन्म हुआ है। एक अन्य अध्ययन (Pile, 1951; Sumner, 1953) में यह देखा गया कि, जो बालक बसन्त, गर्मी या शरद् ऋतु में पैदा होते हैं, वे जाड़े में पैदा होने वाले बच्चों की अपेक्षा अधिक सामाजिक होते हैं। एक अध्ययन में **बोलैण्ड** (Boland, 1951) ने देखा कि, जो शिशु उपकरणों की सहायता से उत्पन्न होते हैं, उनमें अधिक संवेदनशीलता पाई जाती है। वे बेचैनी, भाषा-सम्बन्धी दोष तथा ध्यान एकाग्र करने में कठिनाई अनुभव करने वाले होते हैं।